''रामकथा की पाण्डुलिपियां''

*हर्षिता गोयल

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद्रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।[1]

प्रस्तुत श्लोक में रामायण कथा का महत्त्व दर्शाया गया है। आदिकाल से यह कथा समाज में निरन्तर अपनी महिमा प्रवाहित करती आ रही है। रामायण कथा के प्रमाण भारत में तथा नेपाल, थाइलैण्ड, जैसे अन्य देशों से भी प्राप्त होते हैं। भारतीय संस्कृति की धरोहर के रूप में महाभारत तथा रामायण सदृश ग्रन्थ विद्यमान हैं। रामकथा लोकजीवन के संपूर्ण दृश्य को स्वयं में समाहित करती है। एक मनुष्य की कर्तव्यपरायणता, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, मातृभक्ति, स्वामीभक्ति तथा स्त्री का पुत्रप्रेम, पातिव्रत्य, सतीत्व, स्वाभिमान रक्षा में किया गया त्याग तथा पति के हित में प्रदत्त बलिदान आदि समस्त मूल्य रामकथा में सन्निहित हैं। वे मूल्य स्वयं में आदर्शसमाज स्थापित करने का सम्पूर्ण सामर्थ्य रखते है।

वर्त्तमानयुग में रामकथा लोकजीवन का दर्पण बन गई है, पाठक पर इस कथा का प्रतिबिम्ब इतना गहन रूप से प्रतिबिम्बित होता है कि रामकथा का पाठक तथा श्रोता स्वयं के परिवार में, समाज में यथा स्वयं में रामकथा के पात्रों को खोजता है। रामकथा के इस प्रभाव से एक माता अपने पुत्र में राम की छवि देखती है, एक पति अपनी पत्नी में सीता की छवि, तथा एक पिता अपने दोनों पुत्रों में राम-लक्ष्मण की छवि को देखता है। आदर्शकथा के यह आदर्शपात्र भारत के अनेकों समाज में, अनेक विचारधाराओं में, तथा अन्यान्य अनेकों सम्प्रदायों में समाये हुए हैं। तथापि सभी समाज के राम एक है, विविधसमाज की सामाजिकभाषाओं में भिन्नता हो सकती है, परन्तु राम के चरित्र में नहीं। सामाजिकविविधता एवं दृष्टिकोण के कारण संस्कृत में वाल्मीकिरामायण, अवधि में रामचरितमानस, कन्नडभाषा में 'पम्प रामायण', तमिल भाषा की 'कंब रामायण' विविध लोकभाषाओं द्वारा रामकथा को लोकजीवन में स्थापित किया गया है।

यदि संस्कृत भाषा की बात करें तो वर्तमानयुग में भी अनेक प्राचीन रामकथा के ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। प्राचीनता के कारण इन ग्रन्थों से ज्ञान-अर्जन परम्परा को आधुनिकयुग में भी जीवित रखा गया है। इन प्राचीन भाषायुक्त ग्रन्थों को 'पाण्डुलिपि' के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। रामकथा की पाण्डुलिपियों की शृंखला में सर्वप्रथम 'अध्यात्म-रामायण' प्रस्तुत है।[2]

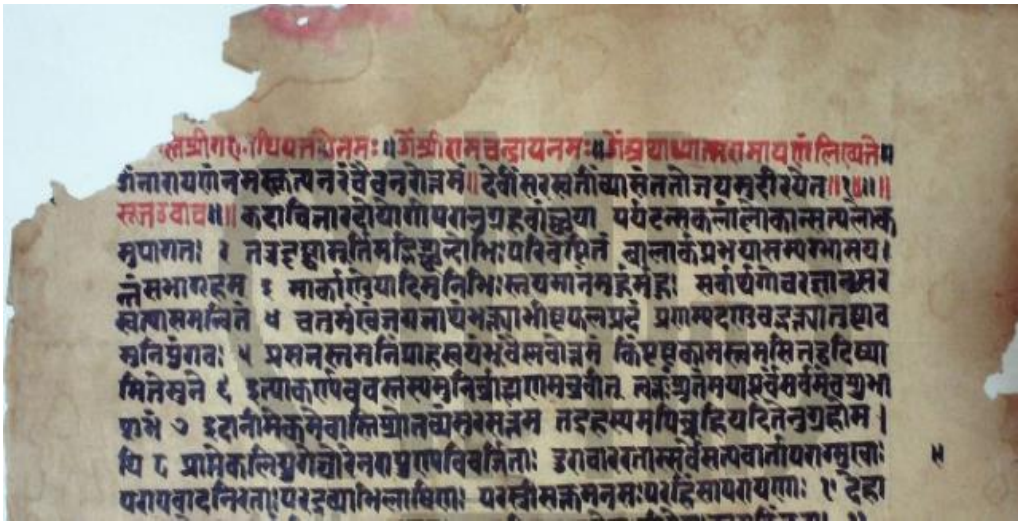

यह अध्यात्म-रामायण की ५२५ वर्ष प्राचीन पाण्डुलिपि संस्कृत भाषा में प्राप्त होती है। महर्षिव्यास द्वारा अध्यात्मरामायण की रचना हुई। अध्यात्मरामायण की इस पाण्डुलिपि में ३२२ पृष्ठ है, तथा प्राप्तपृष्ठ का माप १२ × ५.५ है। प्राचीनकालीन हाथों द्वारा निर्मित पृष्ठ पर यह रामायण लिखा गया है। अध्यात्मरामायण में मूलरूप से अध्यात्मतत्त्व को दर्शाया गया है, जिससे जीव और शिव की एकरूपता हो जाये। 'स्वस्तिश्रीगणेशायनमः' से इस पाण्डुलिपि का प्रारम्भ तथा 'समाप्तश्चायं अध्यात्मरामायणमोम्' शब्दों द्वारा ग्रन्थ पूर्णता प्राप्त करता है। स्थान स्थान पर जहां मंगलाचरण अथवा 'सूत उवाच' आदि स्थानों पर लाल स्याही द्वारा कथन का वैशिष्ट्य दर्शाया है, सम्भवतः यह उस समय की लेखनशैली की विशिष्टा हो सकती है। शिवपार्वती के संवाद द्वारा रामकथा को प्रस्तुत किया गया है। जिसमें शिव जी वक्ता तथा माता पार्वती श्रोत्री के रूप में वर्णित है।

सात काण्ड में विभक्त यह रामकथा की पाण्डुलिपि भगवत्प्राप्ति में आत्मसमर्पण प्रक्रिया को प्रतिपादित करती है। तदनन्तर रामकथा की अन्य अनेक पाण्डुलिपियाँ तुलसीदास विरचित रामचरितमानस के रूप में मिलती हैं। तुलसीदास जी ने लोकभाषा अवधि में रामकथा का प्रतिपादन किया है। तुलसीदास लिखित मूलरचना के अवशेषों के विषय में दृढप्रमाण प्राप्त नहीं होते परन्तु इस ग्रन्थ के प्राचीन अवशेष अवश्य सम्प्राप्त होते है। उनका समय बीसवी शताब्दी से चारसो अथवा पाँचसो वर्ष पूर्व माना जाता है। रामचरितमानस की प्राप्त पाण्डुलिपियों में सर्वप्राचीन पाण्डुलिपियाँ सत्रहवीं तथा अट्ठारवीं शताब्दी में लिखी गई है। जिनमें से कुछ प्रतियां सामान्यरूप से हस्तनिर्मित पृष्ठों पर लिखित है, तो कुछ प्रतियां रंगबिरंगे चित्रों द्वारा दृश्यों को प्रदर्शित कर रही है।

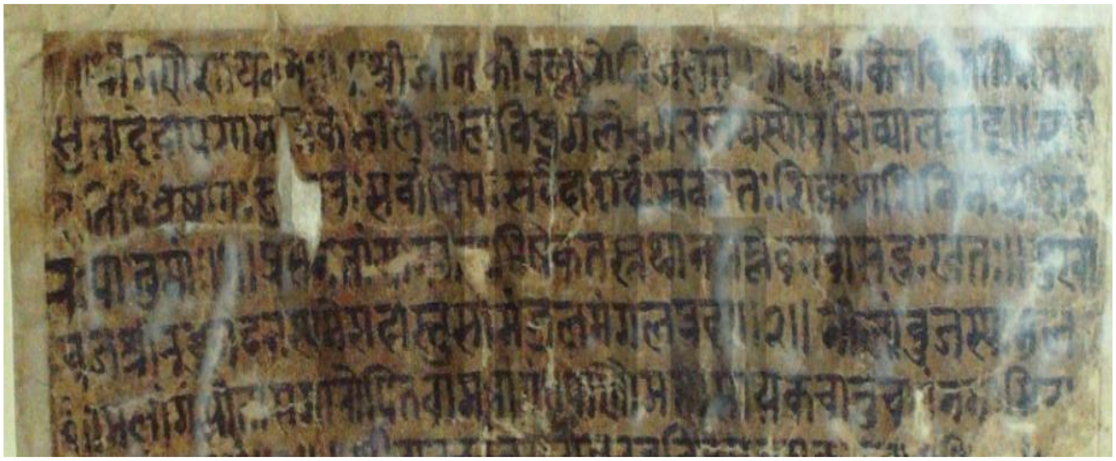

यह प्रति संभवतः १७५ से २०० वर्ष पुरानी है।[3] ७५४ पृष्ठात्मक इस प्राचीन पाण्डुलिपि को भारत सरकार द्वारा सुरक्षित रखा गया है। इसके प्रमाण रूप में विविध प्रसंग के ८ पृष्ठ प्राप्त है। ग्रन्थकार ने श्रीगणेश के स्मरण उपरांत सीताराम के स्मरण से मंगलाचरण किया है। नामस्मरण के अनन्तर संस्कृत परम्परा के अनुरूप 'नीलम्बुज...' श्लोक द्वारा श्लोकात्मक नमस्कार दर्शाया है। तत्पश्चात् अवधि भाषा में चौपाइयों का लेखन किया गया है। इस पाण्डुलिपि के माध्यम से अनुमान होता है कि प्राचीन परम्परा में लोकभाषा के ज्ञान उपरान्त जनसमुदाय को संस्कृत भाषा का भी ज्ञान था। तथा सांस्कृतिक धरोहर निरन्तर समृद्ध होती रहे इसी विचार के साथ विद्वज्जन स्वयं मूलग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति तैयार करते थे। मूलग्रन्थ को यथावत ही लिखा जाता था परन्तु ग्रन्थ के आदि तथा अन्त में ग्रन्थकार के द्वारा मंगलाचरण किया जाता है, जिस कारण समस्त प्राचीन ग्रन्थों में आंशिक परिवर्तन देखने मिलता है। रामचरितमानस की कुछ प्रतियां चित्रों के साथ भी उपस्थापित की गई है।

प्रस्तुत पाण्डुलिपि का निर्माण सम्भवतः मुगलकाल में हुआ था।[4] मुगलशासन के एक काल पश्चात् मुगलराजा अकबर की मनोवृत्तियों में परिवर्तन आया, अतः उन्होंने भारतीय सभ्यता, तथा हिन्दू ग्रन्थों के प्रति अपनी विशेष रूचि दिखाई। जिसमें सर्वाधिक योगदान उन हिन्दू विद्वानों का रहा, जो उनकी सभा के रत्नों के रूप में स्थ्शोभित रहें। बादशाह अकबर ने रामकथा को मुगलभाषा में भी प्रकाशित करवाया है। तथा मुगलकाल में चित्रकला का अत्यधिक विकास हुआ, जिनका प्रमाण अनेक स्थानों पर प्राप्त होता है। इस सचित्र पाण्डुलिपि का प्रकाशन तो सन् ई. १७०० से १८०० में हुआ परन्तु रचना इससे भी पूर्व हो चुकी थी, यह अनुमान होता है। तुलसीदास रचित रामचरितमानस को चित्रों द्वारा जीवन्तता प्रदान करने में यह प्रथम प्रयास रहा होगा। चित्रित दृश्य के अनुसार केवट श्रीराम को सरयू नदी पार करवाते है। जिस पृष्ठ पर जो चित्र है उस पृष्ठ पर उसी प्रसंग की चौपाई तथा दोहे लिखित है। अर्थात् मुगलकाल में यह पाण्डुलिपि सम्पूर्ण रूप से चित्रित थी तथा चित्रकार ने अपने कौशल द्वारा रामायण के समस्त दृश्यों को प्राकृतिक सौन्दर्य द्वारा यथावत् चित्रित कर चित्रकला की सर्वोच्चता का परिचय दिया है। इस पाण्डुलिपि में नमस्कार, पूर्णविराम, 'दोहे' तथा दोहे की संख्या, तथा पृष्ठ संख्या आदि विशेषचिह्नों को लाल स्याही द्वारा पृथक् रूप से नवीन पद्धतियुक्त वर्णनशैली में वर्णित किया है। २९.३ × २० से. मी. की यह सचित्र पाण्डुलिपि पृष्ठसंख्या, वर्णनशैली, तथा लालस्याही के प्रयोग से प्राचीन चित्रकारिता तथा वर्णनकौशल की पारंगतता को प्रदर्शित करता है।

रामकथा की इस लेखनपरम्परा में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य क्षत्रियवंशजो द्वारा तथा मुगलकाल में अकबर द्वारा किया गया। श्रीराम स्वयं क्षत्रियवंशज थे, अतः पूर्वजों की परम्परा का अनुसरण करनेवाले भारतीय क्षत्रिय पूर्वजों के प्रतीकों को विशेषरूप से संग्रहित कर पूजते थे। इन प्रतीकों में युद्ध में प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र (ढाल-तलवार आदि), तथा कवियों द्वारा लिखित उनके कृत्य सर्वाधिक मुख्य माने जाते थे। प्राचीन भारतीय परम्परा में राजकृत्यों का गायन चारणों तथा भाटों द्वारा किया जाता था। उस गायन में वंशजों की वंशावलि में अधिकांश क्षत्रियों को राम को आदर्श बनाकर शूरवीरता, धैर्य, तथा विनम्रता आदि गुण सिखाये जाते थे। सूर्यवंशीय मेवाड शासक राणा जगतसिंह जी अपने सचित्र वाल्मिकी रामायण के निर्माण कृत्य द्वारा यह प्रमाणित करते है।

रामकथा का प्रारम्भिक बिन्दु ‘वाल्मिकी रामायण’ को कहा जाता है। लोककाव्य के रूप में प्रवाहित यह मन्दाकिनी वाल्मिकी रामायण से उद्‌भूत हुई है। श्रीराम के समय में ही महर्षि ने यह ग्रन्थ रचा, यह कथा सर्वजनविदित है। भारतीयपरम्परा में श्रीराम का समय त्रेतायुग माना जाता है, अनुमानतः आज से ८००००० वर्ष पूर्व त्रेतायुग में वाल्मिकी रामायण का प्रथम गान हुआ। इस अद्‌भुत तथा लम्बी यात्रा में वाल्मिकी को अनेक विद्वानों द्वारा यथावत् रूप से लिखा गया। इस प्रकार से रामकथा की सर्वप्राचीन पाण्डुलिपि आज से आठसो वर्ष पूर्व की है। प्रस्तुत चित्रण में हनुमान जी संजीवनी औषधि लेने हिमालय जाते है, वह प्रसंग चित्रित है। इस सचित्र पाण्डुलिपिका प्रकाशन मेवाड के राणा जगतसिंह द्वारा सन् सम्भवतः १६०० में करवाया गया[5], जिसकी प्रेरणा उनको मुगलों से मिली। मुगल राजा भी अपने पूर्वजों के कृत्यों का चित्रण शिलाओं पर करते थे। अतः राणा जगतसिंह को भी चित्रकला के साथ रामायण को प्रस्तुत करने की प्रेरणा मिली। इस सम्पूर्णपाण्डुलिपि में ४०० से अधिक विविध चित्रों का समावेश है। सात खण्डो में विभक्त पाण्डुलिपि के पांच खण्ड ब्रिटिश पुस्तकालय में तथा शेष दो खण्ड भारत में स्थित है। इस पाण्डुलिपि कि अनुमानित माप ८ × २ के अनुपात में है। आकार की दृष्टि से यह ग्रन्थ लम्बचोरस आकार में वर्णित है। पाण्डुलिपि के दोनों तरफ पृष्ठसंख्या तथा एक तरफ काण्डविवरण दृष्टिगोचर होता है।

रामकथा की इस शृंखला में अत्यधिक अद्भुत रस से परिपूर्ण सीताचरित्र को अद्भुतरामायण के माध्यम से कवि ने दर्शाया है। अद्भुतरामायण के रचनाकार वाल्मिकी को माना जाता है, परन्तु एक ही कर्ता द्वारा एक ही कथा को भिन्न भिन्न रूप से प्रतिपादित स्वयं में विरोधाभास प्रतीत होता है। अतः अद्भुतरामायण के कर्तृत्व में विविध मतमतान्तर हैं। वाल्मिकी के उपरांत अन्य कर्ता का भी विशेष उल्लेख प्राप्त न होने से वाल्मिकी ही इस रामायण के कर्ता माने जाते है। सम्भवतः वाल्मिकीरामायण में सीता पर हुए अत्याचार को देखते हुए महर्षिवाल्मिकी ने यह ग्रन्थ रचा हो, यह अनुमान होता है। वाल्मिकीरामायण में राम की मर्यादा तथा सीता का त्याग दर्शाया है, परन्तु इस कथा के मूल में समाहित सीता को किसी ने नहीं देखा, अतः माता सीता का सामर्थ्य, तथा उनकी दैविक शक्तियों को प्रदर्शित किया गया है। अद्भुतरामायण की यह कथा सीता माता के शक्तितत्त्व को दर्शाती है, जिस शक्तितत्त्व के सामने वाल्मीकिरामायण के राम सामान्य मनुष्य बनकर रह जाते है। वाल्मिकीरामायण में जहां सीता माता प्रतिक्षण राम का भजन करती थी, वहीं इस रामायण में रामस्वयं सीता माता के सहस्रनामों द्वारा उनकी पूजा करते हैं। यहां माता सीता को आदिशक्ति के रूप में दर्शया गया है।

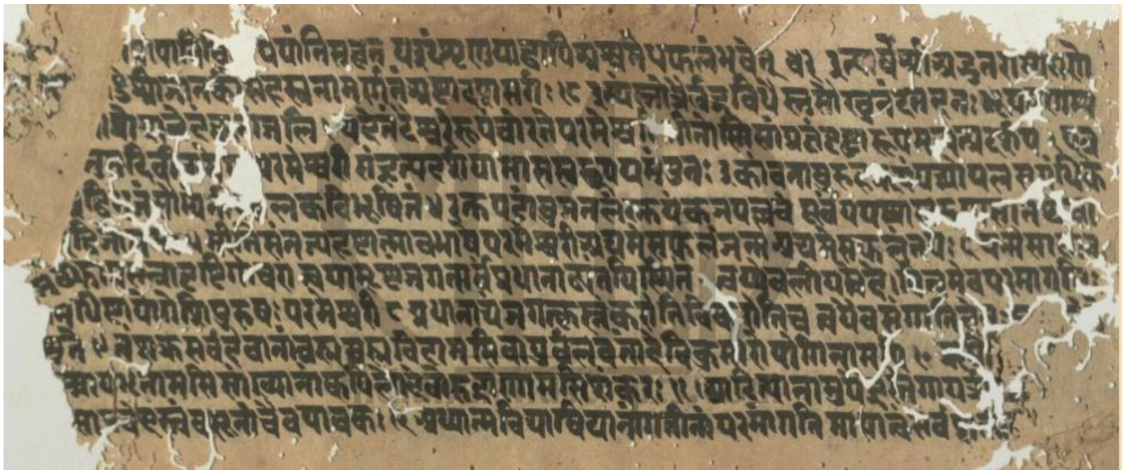

यह अद्भुतरामायण की प्राचीन पाण्डुलिपि प्राप्त होती है, जो सम्भवतः वर्तमान से पांचसों वर्ष पूर्व पन्द्रहवीं शताब्दी की रचना मानी जाती है।[6] इस पाण्डुलिपि के ५८ पृष्ठ सम्प्राप्त होतें हैं। लम्बाई चौडाई में पृष्ठ का मान ११.४ × ४.८ है। भारतसरकार की पाण्डुलिपि संरक्षण शाखा द्वारा इस पाण्डुलिपि को नामांकित (नामांकन संख्या – ID – MRE0455) करके सुरक्षित किया गया है। देवनागरी भाषा में लिखित प्रति में सर्वत्र काली स्याही द्वारा समानरूप से लेखन किया गया है। प्राप्त अन्यग्रन्थों के अनुसार अद्भुत रामायण में २७ सर्ग हैं। प्रस्तुत पृष्ठ में स्पष्टतया **'इत्यार्षे**

श्रीअद्‌भुतरामायणे श्रीजानकीसहस्रनामवर्णने अष्टादशसर्गः'[7] लिखा है। इन पाण्डुलिपियों के अलावा अन्य भी कई भाषाओं में रामकथा कथा के प्राचीन भजन, प्राचीनस्तोत्र, रामकथा के पात्रों के चरित्र, आदि अनेक विषयों की पाण्डुलिपियां भारत में सुरक्षित है। अयोध्या में सम्भवतः विविध प्रकार की एक हजार से भी अधिक प्राचीन प्रतियां मन्दिरों में पूजी जाती है। इस प्रकार रामकथा के विविध अंश अनेक भाषाओं में आज भी विद्यमान है।

प्रस्तुत शोधलेख में कुछ अंशो द्वारा रामकथा के प्राचीन प्रमाणों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, मान्यता के अनुसार वर्तमान में भारत सरकार के पास जितनीप्राचीन पाण्डुलिपियां नहीं है उनके अधिक प्राचीन प्राण्डुलिपियां घरों में सुरक्षित रखी गई है। जिन प्रतियों को ईश्वर मानकर पूर्वजों के अस्तित्व के रूप में वंशानुगत परम्परा द्वारा पूजा जाता है। अनेक ब्राह्मणपरिवार वर्तमान में भी रामकथा की प्रति को स्वयं राम मानकर यथोपचार पूजा कर प्रणाम करते हैं। रामकथा के यह समस्त अंश भारतीय संस्कृति को प्रमाणित करते हुए इतिहास पक्ष को सुदृढ बनाते हैं। शोधपत्र में प्रतिपादित समस्त प्रमाणों को भारतसरकार की साइट द्वारा एकत्रित किया गया है।

***संस्कृत अध्येत्री**
नेट संस्कृत

सन्दर्भ:-

1. वाल्मीकि रामायण – बालकाण्ड
2. http://indianmanuscripts.com/scriptviewer.php?show=412
3. http://indianmanuscripts.com/scriptviewer.php
4. https://www.christies.com/en/lot/lot-6142525
5. https://www.theluminescent.org/2017/02/the-mewar-ramayana-illustrated-and.html
6. http://indianmanuscripts.com/scriptviewer.php#
7. अद्‌भुतरामायण